■ कविताएं

भगतसिंह और अवतार सिंह 'पाश' के शहादत दिवस (23 मार्च) के अवसर पर

मैं पूछता हूं भगतसिंह

पश्चाताप का एक फूल
'इंकलाब जिन्दाबाद' के घोष को
अनारकली की तरह चिनकर
राजभवन की दीवारों में
हम रमेंगे फिर
गोरी सत्ता की प्रशस्ति में
किसने सोचा था यह ।
किसने सोचा था कि
पचास वर्ष की आजादी के बाद भी
शोषण जारी रहेगा
बस काले-गोरे का भेद नहीं होगा
पूंजीवादी भेड़ियों में ।
नहीं सोचा था तुमने
या तुम्हारे साथियों ने
कि यह देश
जिसकी खातिर तुम जिये पलपल
क्षण-अनुक्षण
निकलेगा इतना कृतघ्न
कि तुम्हारी याद तक न आयेगी ।
मैं पूछता हूं भगतसिंह
तुम क्यों मरे इसके लिए
और क्यों लिया था तुमने
इस देश में जन्म ?

– वेदप्रकाश 'वटुक'

पाश

मिट्टी की महक
बारिश होने से ही फैलती है
वृक्षों की चहक
पत्तियों के वसंत गान से निकलती है
कवि की उमंग
समय की मांग से गूंजती है
पंजाब के ईमान से पाश पैदा होता है
जो विप्लव गायन बनकर
विमुक्ति गीत गाता है।
मिट्टी की महक
पक्षी की चहक
नदी सी चमक
पाश की दमक है
जिसे पंजाब ने अपनाया है
और सारे काव्य संसार ने गले लगाया है
भगतसिंह को देखते-याद करते
स्वयं कविता बन गये।
अराजकता के माहौल में
कवि बनकर क्रान्ति को प्यारे हो गये
पाश के हत्यारे जीते जी लाश हो गये
और पाश मरकर भी
अक्षरों में जी गये
इतिहास रच गये।

– ज्वालामुखी
(प्रख्यात तेलुगु कवि)

मथुरा की छात्राओं के बहादुराना संघर्ष में कदम से कदम मिलाते हुए फिरोजाबाद, आगरा, एटा, अलीगढ़ और हाथरस के छात्र-छात्राओं ने भी साथ दिया। फीस वृद्धि विरोधी मोर्चेबंदी की, रास्ते जाम किये, गिरफ्तारियां हुईं, ट्रेनों का आवागमन ठप रहा और दूसरी ओर से दमन का सिलसिला जारी रहा। इसी बीच एक अन्य मंत्री को अपने सारे कार्यक्रम स्थगित कर मथुरा के सर्किट हाउस में चोर दरवाजे से भागना पड़ा। प्रेस कान्फ्रेन्स तक करने की हिम्मत नहीं हुई। इससे छात्राओं के अभिभावकों में भी नाराजगी फैली। आंदोलन चल ही रहा था कि मुख्यमंत्री राजनाथ सिंह भी दो बार मथुरा आकर अपनी फजीहत करा गये। वृंदावन और कोसीकलां की जन सभाओं में बीच भीड़ से बैनर व काले झंडे दिखाते हुए छात्राओं ने उन्हें ललकारा। वृंदावन की सभा में मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि लखनऊ जाकर वह शीघ्र ही समस्या का समाधान छात्र दरबार में घोषित करेंगे। तभी उन्हें पुनः मथुरा आना पड़ा। कोई निर्णय सरकार नहीं ले सकी थी, नतीजा हुआ कि कोसीकलां की सभा में छात्राओं ने और पुरजोर ढंग से विरोध जताया। पूरे घटनाक्रम से आजिज पुलिस ने सभा खत्म होने पर मुख्यमंत्री के रवाना होते ही सरकारी इशारों पर छात्राओं को घसीट-घसीट कर पीटा और जीपों में ठूंसकर थाने पर ले गई। इस घटना से एक बार फिर पूरे आगरा में गुस्से की लहर फैल गई। विरोध प्रदर्शनों ने जोर पकड़ लिया। मथुरा में सैकड़ों छात्राओं को कोतवाली परिसर में सारी रात खुले आसमान के नीचे रखा गया और उनके अभिभावकों से मिलने-जुलने तक नहीं दिया गया। प्रशासन की शर्त थी कि छात्राएं मुचलके भर कर जमानत ले लें, पर वे उस पर कतई राजी नहीं हुईं। आखिरकार हार कर अगले दिन बगैर शर्त सभी छात्राओं को छोड़ने के लिए प्रशासन मजबूर हुआ।

सरकार छात्राओं की फीस वृद्धि के मसले पर आज तक धूर्ततापूर्ण चुप्पी साधे हुए है राज्य के मुखिया और मथुरा से निर्वाचित तीनों मंत्रियों के विरोधाभासी बयान बताते हैं कि दोनों ही का इरादा एक है, फीसवृद्धि वापस न लेना। उधर आंदोलनरत छात्राओं का मनोबल तोड़ने की चालें भी कालेज प्रबन्धन स्तर पर चली जा रही हैं। छात्राओं का पठन-पाठन अस्तव्यस्त हो चला है और परीक्षाएं सिर पर हैं।

इस समूचे आंदोलन के साथ मुख्य दिक्कत रही दृष्टिकोण और सांगठनिक योजनाबद्धता का अभाव। सरकार के इशारे पर प्रशासन जिस तरह चौकन्ना हो उठा था, उससे जूझने और राज्य की समूची शिक्षा नीति की बखिया उधेड़ने के लिए जैसी इच्छाशक्ति आंदोलन की रगों में होनी चाहिए थी, वह थी तो लेकिन इसे कोई समझदारी से संचालित करने वाला नहीं था, जिससे एक अच्छे खासे आंदोलन को दिशाहीनता और बीच रास्ते की थकान से नहीं बचाया जा सका। बहरहाल, आंदोलन इतना संदेश तो दे ही गया कि सरकार जनता को जितनी आसानी से किनारे लगा कर अपनी खतरनाक नीतियों को थोपना चाहती है, हालात अब उतने आसान रहे नहीं। भीतर ही भीतर ईंट का जवाब पत्थर से देने की चिंगारी खूब सुलगती जा रही है। समय आने पर वह लपटों का आकार ले सकती है जो समस्त तंत्र को झुलसा कर राख कर देगी।

● बीना, वन्दना, रंजना